International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 6, June - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

नाट्य की आचार्य परम्परा

Manoj Mishra: Research scholar Central Sanskrit University New Delhi

भरत मुनि के पहले शिलादी आदि आचार्य रह चुके हैं जिन्होंने नटसूत्र लिखा था परंतु इस समय भरत मुनि के पहले या समकालीन नाट्य विषयक ग्रन्थ प्राप्त नहीं होते हैं। शार्ङ्गदेव ने संगीत रत्नाकर में आचार्य परंपरा वर्णित की है।

सङ्गीतार्थं पुरा ब्रह्मा भरतः काश्यपः शिवः।
मतङ्गो याष्टिको दुर्गा शक्तिः शार्दूलवाहिनी।
विशाखिलो दत्तिलश्च कम्बलोऽश्वतरस्तथा।
वायुर्विश्वावसू रम्भार्जुनौ नारदतुम्बरू।
आञ्जनेयो मातृगुप्तो रावणो नन्दिकेश्वरः।
स्वातिर्गणो देवराजः क्षत्रराजश्च राहुलः।
रुद्रसेनोऽथ भूपालो भोजो भूवल्लभस्तथा।
परमर्दी च सोमेशो जगदेकमहीपतिः।
व्याख्यातारो भारतीये भारतीये लोल्लटोद्भटशङ्ककाः।
भट्टोऽभिनवगुप्तश्च श्रीमत्कीर्तिधरोऽपरः।
अन्येऽपि बहवः पूर्वे चकुस्तन्त्राण्यनेकशः॥
(सङ्गीतरत्नाकर, अ. 1, 14 - 19)

इसमें से कुछ के ग्रन्थ प्राप्त होते हैं जैसे सुमेर या सोमेश्वर एवं भोज के नाट्य विषयक ग्रंथ दंतिल का दंत्तिलम् नामक ग्रंथ प्राप्त होते हैं।

शार्ङ्गदेव के द्वारा तीन श्रेणियां बनाई है
1 मिथकीय
2 ऐतिहासिक
3 नाट्यशास्त्र के टीकाकार
तृतीय श्रेणी के पांच नाम उल्लेखित करते हैं भट्टलोल्लट ,उद्भट , शङ्कुक , अभिनवगुप्त एवं कीर्तिधर।
अभिनवगुप्त ने भी अपनी टीका अभिनवभारती में उद्भट ,शङ्कुक, कीर्तिधर इन नामों का उल्लेख किया है।

राजशेखर ने दसवीं शताब्दी में नंदीकेश्वर का उल्लेख रस प्रस्थान के प्रवर्तक के रूप में करते हैं।
नाट्य शास्त्र के आचार्य परंपरा को आगे बढ़ाने वाले भरत मुनि ने 100 पुत्र एवं शिष्य के नाम प्रथम अध्याय में बताए हैं
शाण्डिल्य, वात्स्य, कोहल, दत्तिल, जटिल, अम्बष्टक, तण्डु, अग्निशिख, सैन्धव, पुलोमा, शाड्वलि, विपुल, कपिञ्जलि, बादिर, यम, धूम्रायण, जम्बुध्वज, काकजङ्घ, स्वर्णक, तापस, केदारि, शालिकर्ण,' दीर्घगात्र, शालिक, कौत्स, ताण्डायनि, पिङ्गल, चैत्रक, बन्धुल, मल्लक, मुष्टिक, सैन्धवायन, तैत्तिल, भार्गव, शुचि, बहुल, अबुध, बुधसेन, पण्डुकर्ण, सुकेरल, ऋजुक,
मण्डक, शम्बर, वञ्जुक, मागध, सरल, कर्ता, उग्र, तुषार, पार्षद, गौतम, बादरायण, विशाल, शबल, सुनाभ, मेष, कालिय, भ्रमर, पीठमुख, नखकुट्ट, अश्मकुट्ट, षट्पद, सोत्तम, पादुक, उपानह, श्रुति, चाषस्वर,

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 6, June - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

अग्निकुण्ड, आज्यकुण्ड, वितण्ड्य, ताण्ड्य, कर्तराक्ष, हिरण्याक्ष, कुशल, दुस्सह, लाज, भयानक, बीभत्स, विचक्षण, पुण्ड्राक्ष, असित, सित, विद्युज्जिहव, महाजिह्व, शालङ्कायन, श्यामायन, माठर, लोहिताङ्ग, संवर्तक, पञ्चशिख, त्रिशिख, शिख, शङ्खवर्णमुख, षण्ड, शङ्कुकर्ण, शक्रनेमि, गभस्ति, अंशुमालि, विद्युत, शातजङ्घ, रौद्र तथा वीर।

कोहल
भरत मुनि के 100 पुत्रों में कोहल भी एक है तथा प्रमुख आचार्य है
नाट्य शास्त्र के 37.अध्याय के 18 श्लोक में कहते हैं कि नाट्यशास्त्र में जो शेष रह गया है उसे कारिका प्रयोग निरुक्ति के द्वारा कोहल उत्तरतन्त्र विवेचित करेगे।
वर्तमान नाट्यशास्त्र में कोहल की कारिका मिश्रित हुई प्रतीत होती है
अभिनव भारती में यह कई बार विवरण आता है कि यह पंक्ति कोहल की रची हुई है
(अभिनव भारती भाग एक पृष्ठ संख्या 47)

शातकर्णी
नाट्यशास्त्र मनमोहन घोष भूमिका प्रश्न संख्या 45 में शातकर्णी नामक राजा का वर्णन करते हैं।
शतकर्ण या शलिकर्ण व शातकर्णी का उल्लेख मिलता है।

अश्मकुट्ट तथा नखकुट्ट
आचार्य भरत के 100 पुत्रों की सूची में इनका नाम है
ये युग्म के रूप में मिलते हैं दोनों ने मिलकर नाट्य शास्त्र के विषय में ग्रंथ लिखा होगा सागरनन्दी ने इसका उल्लेख किया है
राहुल
राहुल ने सम्भवतः नाट्य विषयक ग्रन्थ लिखा हो जिसमें अभिनय के विषय में लिखा होगा इसका उल्लेख अभिनवगुप्ता तथा सागरनन्दी ने किया है।
शकलीगर्भ
यह उद्भट्ट के परवर्ती आचार्य माने जाते हैं क्योंकि अभिनव गुप्त ने उद्भट का मत स्वीकार करने का उल्लेख किया है।
कीर्तिधर
शार्ङ्गदेव के उल्लेख से स्पष्ट होता है कि कीर्तिधर ने भरत मुनि के नाट्यशास्त्र पर टीका लिखी थी।
अभिनवभारती के भाग 4 में अभिनवगुप्त कहते हैं कि "नंदीकेश्वर का शास्त्र मैने नहीं देखा कीर्तिधर के आधार पर मैं विवेचन कर रहा हूं"
जायसेनापति के उल्लेख से कीर्तिधर की प्रमाणिकता स्पष्ट होती है।
नृत्तरत्नावली में 33 स्थान पर कीर्तिधर की व्याख्या प्रस्तुत की है।

भट्टतण्डु
शिव के आदेश पर भरत को अङ्हार इत्यादि की शिक्षा दी थी यह प्राचीन आचार्य के रूप में प्रसिद्ध है यह भट्टतण्डु मिथकीय तण्डु से भिन्न प्रतीत होते हैं भट्टतण्डु एवं कीर्तिधर ये दोनो आचार्य आँगिक अभिनय और मार्गी नृत्य वैकल्पिक परम्पराओं के महत्वपूर्ण व्याख्या के रूप में स्मरणीय है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 6, June - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

मातृगुप्त
वक्रोक्तिजीवित के लेखक कुन्तक का नाम सबसे पहले आता है।
कल्हण राजतरंगिणी में कहते हैं की सुप्रसिद्ध महाकवि भर्तिमेण्ढ के समकालीन थे, राजा हर्ष विक्रमादित्य के आश्रित थे।

उद्भट्ट
नाट्यशास्त्र व्याख्याकारों में सबसे प्राचीन अभिनवगुप्त ने अभिनवभारती में उनका एवं औद्भट्ट सम्प्रदाय का बहुत उल्लेख किया है।
उद्भट 4 वृत्तियां न मानकर 3 मानते हैं।
1 न्याय चेष्टा वृत्ति
2 अन्य चेष्टा वृत्ति
3 फल संविदा वृत्ति
हर्ष
वार्तिककार के नाम से नाट्यक्षेत्र में इनका यश है इनका स्वतंत्र ग्रंथ नाट्यवार्तिक था।
10वीं शताब्दी के पहले लिखा गया आर्या छंद में।
भट्टलोल्लट
रस सूत्र की व्याख्या के संबंध में भट्टलोल्लट का प्रथम उल्लेख अभिनव भारतीय में हुआ रस सूत्र के व्याख्याकारों में भट्टलोल्लट उत्पत्तिवाद के प्रवर्तक माने गए ,अनुसन्धि की अवधारणा का प्रतिपादन इन्होंने ही किया था।

शङ्कुक
नाट्य शास्त्र के प्रमाणिक व्याख्याकारों में एक है अभिनवभारती में कई प्रकरण में इनका उल्लेख मिलता है। शङ्कुक ने नाट्यशास्त्र पर विषद टीका की थी यह तथ्य प्रमाणिक है।
नाट्यमण्डप ,आंगिकअभिनय दश रूपक लक्षण सन्धि एवं सन्धि के अंग सात्विक अभिनय एवं सत्व पर अभिनव गुप्त ने शङ्कुक के मत का उल्लेख अभिनव भारती में किया है।

भट्टनायक

भुक्तिवाद के लिए जाने जाते हैं उनके ग्रन्थ का नाम हृदय दर्पण है यह काव्य एवं नाट्यशास्त्र पर मौलिक ग्रन्थ था।

अभिनवगुप्त
तन्त्र परम्परा ,साहित्यशास्त्र ,कलादर्शन, इन सबके विद्वान अभिनवगुप्त का नाट्य जगत में अद्वितीय स्थान है।
शैवदर्शन तथा तन्त्र पर बोधपञ्चदशिका, परात्रिंशिकाविवरण, मालिनी विजयवार्तिक, तन्त्रालोक ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविवृतिविमर्शिनी आदि अनेक ग्रन्थ अभिनवगुप्त ने लिखे। उनके अनेक स्तोत्र भी मिलते हैं। काव्यशास्त्र तथा नाट्यशास्त्र के क्षेत्र में उनकी दो टीकाएँ-आनन्दवर्धन के ध्वन्यालोक पर ध्वन्यालोकलोचन तथा भरत मुनि के नाट्यशास्त्र पर अभिनवभारती

रसनिष्पत्ति विषयक मतों में इनका मत अभिव्यक्तिवाद के नाम से जाना जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- मिश्र, डॉ ब्रजबल्लभ, भरत और उनका नाट्यशास्त्र।
- त्रिपाठी, राधावल्लभ, सङ्क्षिप्तनाट्यशास्त्र।
- द्विवेदी, डा०भारतेन्दु, नाट्यशास्त्र में आङ्गिक अभिनय, विश्वभारती अनुसन्धान परिषद् ज्ञानपुर (वाराणसी)।
- आनन्द, महेश, अंकुर, देवेन्द्रराज, रंगमंच के सिद्धातं, राज कमल प्रकाशन प्रा.ली., नई दिल्ली पहला संस्करण, 2008
- त्रिपाठी, राधावल्लभ, नाटयशास्त्रविश्वकोश
- न्यू भारतीय बुक कॉरपोरेशन भारत दिल्ली